कुलविंदर कौशल

ई—मेल-kulwinderkaushal@gmail.com

नई सुबह

एक साथ कई मच्छरों के काटने से निहाल सिंह की तंद्रा टूटी। उसके आसपास मच्छरों ने घेरा डाला हुआ था। उसने होश संभालते हुए देखा कि आधी रात गुजर चुकी थी, सुबह होने को थी और वह कल शाम का खेत की मोटर कोठड़ी में बेहोश सा हुआ पड़ा था। 'चूस लो तुम भी खून मेरा, पहले बैंक वालों और आढ़तियों ने क्या कम चूसा है...' वह मन के भीतर ही बोला। वह तो आज अपनी जीवन लीला समाप्त करने को ही इस कोठड़ी में आया था परन्तु अपने आप के साथ सवाल जवाब करते हुए कब गहरी सोच में चला गया, उसे मालूम ही नहीं हुआ। बचपन से जवानी तक पहुँचते हुए और अब वृद्ध अवस्था में कहाँ मेहनत में कमी रह गई कि पेट भर खाना भी नहीं मिलता ? क्यों फसल की सारी कमाई लाला का सूद ही खा जाता है? क्यों उसकी और परिवार की छोटी सी ख्वाहिश के लिए मंहगाई शब्द बहुत बड़ा बन जाता है... क्यों... क्यों... और पता नहीं कितने सारे क्यों सारी रात उसके दिमाग में घूमते रहे। किसान यूनियन की रैली के बहुत से शब्द आज उसे याद आए, सरमाएदारी, लूट की जमात, कालाधन- इस के अतिरिक्त और बहुत कुछ जो उस के सिर के ऊपर से गुजर गया।

'नहीं मैं इन शब्दों के जवाब लिए बिना नहीं मरूंगा, इन कठिन शब्दों के अर्थ मैं जान कर ही रहूँगा, निहाल सिंह नहीं मर सकता, तुम निहाल सिंह...' उसने गुस्से से जोरदार दायां हाथ बाएं बाजू पर मारा, चार पाँच मच्छर फ़ौरन ही मर गए। वह उठा और कोठरी का कुंडा खोला, बाहर आसमान में लाली उभरने लगी थी।

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय

कुलविंदर कौशल : पंजाबी लघुकथा के युवा रचनाकार है, जिन्होंने इस क्षेत्र में कम समय में बड़ी जगह बनाई है। इनके पंजाबी में तीन लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं और इनकी रचनाएँ कई संपादित पुस्तकों में भी शामिल की गई हैं। वर्तमान समय में येह त्रैमासिक 'मिन्नी' का संपादन कर रहे है।